2 पत्र-लेखन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपने जीवन को सरस और सफल बनाने के लिए वह अपने परिवार, समाज, संबंधियों, मित्रों तथा सभी परिचितों से संबंध बनाकर रखता था। पत्र-व्यवहार न केवल परिचितों के साथ बल्कि अपरिचितों के साथ भी विचार-विनिमय बनाए रखने में सहायक होता है। पत्रों के माध्यम से हम अपने मित्रों, आत्मीय जनों से विचारों का आदान-प्रदान सहजता से कर सकते हैं। पत्र न केवल व्यक्तिगत संबंधों में बल्कि व्यापार और व्यवस्था में भी मनुष्य के लिए सहायक सिद्ध होते हैं।

- पत्र के दो प्रकार होते हैं–

  1. औपचारिक पत्र
  2. अनौपचारिक पत्र

  औपचारिक पत्र– ये पत्र अपने क्षेत्र में व्याप्त परेशानियों की चर्चा करने, आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उच्चाधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने, सरकारी कर्मचारियों को सूचित करने, समाचार-पत्र के संपादक को, प्रधानाचार्य आदि को लिखे जाते हैं।

- औपचारिक पत्र को भी दो भागों में बाँट सकते हैं–

  1. आवेदन पत्र
  2. व्यावसायिक/आधिकारिक पत्र

  अनौपचारिक पत्र– ये पत्र अपने सगे-संबंधियों, मित्रों एवं परिचितों को लिखे जाते हैं। ऐसे पत्रों में भावनाओं, अनुभूतियों तथा अपनत्व का पुट अवश्य होना चाहिए।

पत्र लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

- पत्र की भाषा सरल व सहज होनी चाहिए।
- वाक्य छोटे व सारगर्भित होने चाहिए।
- लेखन में तारतम्यता होनी चाहिए।
- पत्र संक्षिप्त व अर्थपूर्ण होना चाहिए।
- पत्र में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
- दोनों प्रकार के पत्र पृष्ठ की बाईं ओर से लिखने चाहिए।
- शिकायती पत्र की भाषा में विवेक तथा संयम का भाव होना चाहिए।
- पत्र में दिनांक अवश्य लिखना चाहिए।

औपचारिक पत्र का प्रारूप

प्रारूप–1

.....
..... [जिसको पत्र लिखते हैं, उसका पदनाम एवं पता]
.....

विषय .....

संबोधन .....

.....
.....
..... [विषय-वस्तु]
.....
.....

भवदीय

.....
..... [लिखने वाले का नाम तथा पता]

दिनांक .....

प्रारूप–2

.....
..... [जहाँ से पत्र लिखा जा रहा है– पता]
.....

.....
..... [जिसको पत्र लिखते है, उसका पदनाम एवं पता]
.....

विषय .....

संबोधन .....

.....
.....
..... [विषय-वस्तु]
.....
.....

भवदीय

.....

नाम

.....

दिनांक .....

पत्रों के कुछ नमूने इस प्रकार हैं–

1. आजकल किशोरों के लिए दूरदर्शन पर आ रहे कार्यक्रमों में जीवन-मूल्यों की प्रेरणा देने वाले कार्यक्रम की आवश्यकता को बताते हुए संपादक को प्रकाशनार्थ एक पत्र लिखिए।

मुख्य संपादक

नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली

विषय : दूरदर्शन कार्यक्रमों में जीवन-मूल्यों की बहुलता हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं भारत देश का सामान्य नागरिक हूँ और देश की युवा पीढ़ी पथभ्रष्ट हो रही है, इसलिए चिंतित होकर आपको पत्र लिख रहा हूँ। देश की युवा पीढ़ी, जिसके कंधे पर भारत का भविष्य निर्भर करता है, दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले जादू-टोने, सास-बहू के षड्यंत्र व चुड़ैलों के कार्यक्रमों को देखकर दिशा-भ्रष्ट हो रही है। भारत के युवाओं को आगे चलकर देश की बागडोर सँभालनी है। ऐसे में यदि वे इन कार्यक्रमों को देखकर इन पर विश्वास करने लगेंगे तो यह समाज और देश दोनों के लिए खतरनाक है। टीवी का युवाओं पर बड़ी जल्दी प्रभाव पड़ता है, इसलिए इस पर इस प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित होने चाहिए, जिनसे युवक व युवतियाँ देश-प्रेम की ओर उन्मुख हों। वे देश की उन्नति में अपना योगदान दें। युवाओं में शारीरिक बल के साथ-साथ कुछ कर गुज़रने की तमन्ना व ढेरों सपने होते हैं, लेकिन ऐसे कार्यक्रम उनके सपनों पर कुठाराघात कर उन्हें लाचार बना देते हैं। वे अपने बाहुबल पर नहीं इस तरह की बातों पर विश्वास करने लगते हैं जो उचित नहीं है।

आपसे अनुरोध है कि आप मेरे इस पत्र को अपने अख़बार में छापें, ताकि संबंधित अधिकारी इसे पढ़कर इस पर उचित कार्यवाही कर सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

10 जुलाई, 20××

2. बरसात के दिनों में जल जमाव के कारण होने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए नगर निगम अधिकारी को पत्र लिखिए।

अधिकारी महोदय

नगर निगम कार्यालय

नई दिल्ली

विषय : जल भराव से होने वाली कठिनाइयों की जानकारी हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं रोहिणी सेक्टर-1 का निवासी हूँ और अपने क्षेत्र में वर्षा के दिनों में होने वाले जल-भराव से परेशान होकर आपको पत्र लिख रहा हूँ।

सेक्टर-1 में वर्षा के दिनों में गलियों में पानी भर जाता है। शौचालय ऊपर तक भर जाते हैं, जिससे उनका गंदा पानी न केवल गलियों में वरन घरों के अंदर तक पहुँच जाता है। आप सोच सकते हैं ऐसे में वहाँ रहने वालों का क्या हाल होता होगा। पानी निकल जाने के पश्चात नालियों की सारी गंदगी गलियों व घरों में सड़ाँध पैदा कर देती है। बच्चे व बूढ़े बीमार होने लगते हैं। डेंगू, मलेरिया, हैज़ा जैसी बीमारियाँ हर घर में अपना स्थान बना लेती हैं। आने वाले माह में वर्षा आरंभ होने को है और हम उससे उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों को सोचकर ही चिंतित हो रहे हैं।

हम सभी क्षेत्रवासियों का आपसे अनुरोध है कि समय रहते हमारी समस्या का उचित समाधान कर दें ताकि हम चैन की साँस ले सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

31 मार्च, 20××

3. यात्रा करते समय मेट्रो में छूट गए अपने बैग और मोबाइल को मेट्रो-कर्मचारी द्वारा वापिस भेज दिए जाने पर उसकी ईमानदारी की प्रशंसा करते हुए पत्र लिखिए।

अध्यक्ष महोदय
मेट्रो कार्यालय
नई दिल्ली

विषय: मेट्रो कर्मचारी की प्रशंसा हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं सेक्टर अठारह रोहिणी का निवासी हूँ। आप का ध्यान एक अच्छे व ईमानदार मेट्रो-कर्मचारी की ओर दिलाना चाहती हूँ।

मैं कल सुबह लगभग 7 बजे सेक्टर-18 से मेट्रो पकड़कर 'एम्स' के लिए गई थी। मेरे पास मेरे छोटे बैग के अतिरिक्त लैपटॉप बैग भी था। जिसमें मैंने मोबाइल भी रख दिया था। डॉक्टर से मिलने की हड़बड़ी में मैं अपना बैग अपनी सीट के नीचे ही भूल गई। अस्पताल जाकर याद आया कि मुझे तो यहीं से ऑफिस जाना था, बैग तो वहीं छूट गया। बहुत दुख हो रहा था कि अब लैपटॉप के बिना कैसे काम चलेगा। बैग में लगभग 3000 रू॰ व ज़रूरी कागज़ों की फाइल भी थी। तभी आपके नरेश नाम के कर्मचारी का फोन आया और उन्होंने वह बैग लेने के लिए मुझे एम्स मेट्रो स्टेशन पर बुलाया। मैं वहाँ पहुँची और नरेश जी ने मेरा बैग ज्यों-का-त्यों मुझे लौटा दिया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं कैसे उनका धन्यवाद करूँ। सच में आज भी दुनिया में ईमानदार है, तभी यह दुनिया चल रही है। उन्होंने बताया कि सफ़ाई करते समय उन्हें मेरा यह बैग मिला, जिसकी एक जेब से मेरा कार्ड था, जिस पर मेरा फोन नं॰ लिखा था। मेरे पैसे, मोबाइल व लैपटॉप सब कुछ उस बैग में मौजूद थे।

आपसे अनुरोध है कि आप अपने इस कर्मचारी को प्रशंसा करते हुए सम्मानित करें ताकि दूसरों को भी ऐसा कार्य करने की प्रेरणा मिल सके।

धन्यवाद।

भवदीया
क.ख.ग.
10 फरवरी, 20××

4. परिवहन निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखिए, जिसमें आपने गाँव या कॉलोनी में बस चलाने का अनुरोध किया गया हो।

अध्यक्ष महोदय
परिवहन निगम, नई दिल्ली

विषय: गाँव तक बस चलाने का अनुरोध करते हुए पत्र।

मान्यवर

मैं रोहिणी सेक्टर-35 के पास रज़ापुर गाँव का निवासी हूँ। आपसे अपने गाँव तक बस चलाने का अनुरोध करते हुए पत्र लिख रहा हूँ।

श्रीमान जी, हम सभी यहाँ रज़ापुर के वासी खराब बस-व्यवस्था से परेशान हैं। हमारे यहाँ से सुबह-सुबह लगभग सौ लोग काम पर जाने के लिए निकलते हैं, लेकिन गाँव के पास बस-स्टैंड तो पिछले वर्ष बना दिया गया, पर वहाँ कोई बस आती-जाती नहीं। हमें लगभग 2 से 3 किलोमीटर तक पैदल चलकर सेक्टर 34 के पास पहुँचना पड़ता है। वहाँ भी एक निश्चित समय पर केवल एक ही बस आती है। दोनों गाँवों के निवासियों के लिए एक ही बस में इतनी सवारियों का चढ़ना लगभग असंभव हो जाता है। कभी झगड़ा तो कभी गाली-गलौच होने लगता है। काम पर पहुँचने में देरी होने से मालिक की डाँट भी खानी पड़ती है। बच्चों को स्कूल पहुँचने में देरी होने से वे भी स्कूल में सज़ा पाते हैं। स्त्रियाँ तो कहीं आने-जाने लायक रहती ही नहीं, क्योंकि छोटे बच्चों को लेकर इतनी दूर तक पैदल चलना, फिर सामान ढोकर लाना उनके लिए मुश्किलें खड़ी कर देता है।

आपसे अनुरोध है कि आप स्वयं इस कार्य को अपने हाथ में लेकर हमारी समस्या का उचित समाधान करें। सभी क्षेत्रवासी आपके प्रति अनुगृहित होंगे।

धन्यवाद।

भवदीय
क.ख.ग.
24 जुलाई, 20××

5. प्लास्टिक की चीज़ों से हो रही हानि के बारे में किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर अपने सुझाव दीजिए।

संपादक महोदय

संध्या टाइम्स, नई दिल्ली

विषय : प्लास्टिक की चीज़ों से होने वाली हानियों के विषय में पत्र।

मान्यवर

देश का सामान्य नागरिक होने के नाते प्लास्टिक की चीज़ों से हो रहे नुकसान को लेकर चिंतित हूँ, इसलिए आपको पत्र लिख रहा हूँ।

कुछ दिनों पहले कारखाना क्षेत्र में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ जाकर जो देखा उसे शब्दों में बयाँ कर पाना आसान नहीं, क्योंकि कर्मचारियों की स्थिति व आसपास का दूषित वातावरण देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। हम सभी जानते हैं कि प्लास्टिक बाहर से दिखने में जितना सुंदर लगता है, उतना ही बनते समय खतरनाक भी होता है। इससे वायु प्रदूषित होकर हमारी साँसों द्वारा शरीर के भीतर प्रवेश करके विभिन्न बीमारियों को जन्म देती है। लोग प्लास्टिक की थैलियों में गर्म खाना लेकर आते हैं, वह भी दूषित होकर शरीर के भीतर जाता है। हम इन सभी बातों को जानकर भी अनजान बने घूम रहे हैं। अस्थमा, कैंसर, फेफड़ों से संबंधित रोग इस प्लास्टिक की ही देन हैं। यदि हम चाहते हैं कि हम अपना जीवन अच्छे से जीएँ तो आवश्यक है कि प्रण लें कि प्लास्टिक की इन चीजों का प्रयोग न स्वयं करेंगे और न किसी को करने देंगे।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप इस पत्र को अपने अख़बार में छापें ताकि आम लोग इसे पढ़कर जागरूक हों तथा प्लास्टिक की चीज़ों से होने वाली हानियों को समझकर इसका प्रयोग कम कर दें तभी हम अपने मकसद में कामयाब होंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

15 दिसंबर, 20××

6. क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की सूचना देते हुए क्षेत्र के थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

अध्यक्ष महोदय

थाना रानीबाग

नई दिल्ली

विषय : क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की सूचना हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं रानीबाग क्षेत्र का आम नागरिक हूँ और पिछले दिनों क्षेत्र में बढ़ती आपराधिक गतिविधियों से परेशान होकर आपको पत्र लिख रहा हूँ।

कल शाम को सब्ज़ी लेते समय दो मोटर साइकिल सवार लड़कों ने महिला की चेन खींच ली। उससे पहले सुबह-सुबह फोन पर बात कर रहे एक प्रौढ़ के हाथ से मोबाइल फोन छीनकर भाग गए। कल रात को साथ वाली गली में चोरों ने सेंध मारी। ये कुछेक घटनाएँ दो-तीन दिन के अंदर ही घटित हुई हैं। कुछ दिन पहले रात करीब 11 बजे मैंने तीन-चार लोगों को रेकी करते देखा और अपने क्षेत्र के प्रधान से इस विषय में बात भी की। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे आपसे मिलकर इस विषय में अवश्य चर्चा करेंगे। कुछ अराजक तत्व जान-बूझकर पड़ोस में झगड़ा तक करवा रहे हैं जबकि वे हमारे क्षेत्र के निवासी भी नहीं हैं। इन तत्वों से बात करते हुए भी डर लगता है। बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेजना भी एक समस्या बन चुका है। घर की महिलाएँ अलग परेशान हैं कि बच्चे खेलने नहीं जाएँगे तो सारा दिन घर में उधम मचाएँगे। संध्या समय भी पार्क खाली नज़र आते हैं। क्षेत्र का माहौल डरा-डरा-सा हो गया है।

आप से विनम्र प्रार्थना है कि आप इस विषय में स्वयं हस्तक्षेप करते हुए इस क्षेत्र का दौरा करें और सारी स्थिति को समझकर उसके अनुकूल पुलिस कर्मियों को तैनात करें। दुर्घटना होने से पहले यदि उसका बचाव कर लिया जाए तो अधिक उचित है।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

4 अगस्त, 20××

7. आपके विद्यालय में आयोजित 'वन-महोत्सव' पर वृक्षारोपण से संबंधित कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में पर्यावरण मंत्री, भारत सरकार को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।

पर्यावरण मंत्री

भारत सरकार

भारत

विषय: वन-महोत्सव के उपलक्ष्य में आमंत्रण-पत्र।

मान्यवर

मैं केंद्रीय विद्यालय का प्रधानाचार्य आपको वन-महोत्सव पर आयोजित वृक्षारोपण के कार्यक्रम के लिए आमंत्रित करना चाहता हूँ। हमारे स्कूल में लगभग 4 एकड़ ज़मीन खाली पड़ी है, जिसे हमने क्रिकेट, हॉकी के खेल के मैदान के रूप में छोड़ रखा है। उसी के चारों तरफ इस बार वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया है। बच्चे बहुत उत्साहित हैं और चाहते हैं कि आप स्वयं आकर उनका मार्ग-दर्शन करें तथा उनको संदेश भी दें कि वृक्ष हमारे लिए व हमारी आने वाली संतानों के लिए कितने ज़रूरी हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप पर्यावरण के हित में तथा बच्चों का हौसला बढ़ाने के लिए अवश्य पधारेंगे। अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय यदि इन बच्चों के साथ वृक्षारोपण में लगाएँगे तो बच्चे तो प्रसन्न होंगे ही साथ ही हमें भी आपके सान्निध्य में रहने का अवसर प्राप्त होगा।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

24 जुलाई, 20××

8. पुलिस आयुक्त को पत्र लिखकर शिकायत कीजिए कि आपके क्षेत्र में कुछ अनजबी, अनचाहे लोग घूम रहे हैं, जिनसे लोगों में असुरक्षा और डर की भावना बढ़ रही है।

पुलिस आयुक्त

थाना रोहिणी

सेक्टर-24, नई दिल्ली

विषय: अजनबी, अनचाहे लोगों की शिकायत हेतु पत्र।

मान्यवर

श्रीमान जी, मैं सेक्टर-24 रोहिणी का निवासी हूँ और अपने क्षेत्र में घूम रहे अजनबी, अनचाहे चेहरों को देखकर परेशान हूँ। संध्या समय ऑफ़िस से लौटते हुए मैंने लगभग पंद्रह दिन पहले चार-पाँच अजनबी लोगों को देखा। मैंने सोचा कि शायद किसी के मेहमान होंगे, लेकिन मेरी सोच गलत साबित हुई, जब डी-18 में रात को चोरी हो गई। ये लोग कई दिनों से रेकी कर रहे थे। इन्हें देखकर लग रहा था कि न तो ये इस क्षेत्र के हैं और न ही ये अच्छे घरों से संबंधित हैं। श्रीमान शर्मा से बातचीत करते हुए मैंने कहा भी था कि सर, मुझे ये चार लोग अजनबी लग रहे हैं, इनकी आँखें किसी विशेष चीज़ को ढूँढ़ती हुई मालूम पड़ती हैं। जब से ये यहाँ किराए पर कमरा लेकर रहने लगे हैं तब से हमारे क्षेत्र में कुछ-न-कुछ गलत होता ही रहता है।

आप से अनुरोध है कि आप इस विषय में स्वयं हस्तक्षेप करें तथा इन अजनबी व अनचाहे लोगों से स्वयं बातचीत करके सारी स्थिति को जानने का प्रयत्न करें। दुर्घटना से पहले यदि कार्यवाही हो जाए तो अधिक अच्छा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी समस्या को समझ कर उचित कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

22 मार्च, 20××

9. रेलयात्रा में सामान चोरी हो जाने की सूचना देते हुए पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए।

पुलिस अधीक्षक
मुख्य पुलिस थाना
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

विषय: सामान चोरी की सूचना देने हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं पश्चिम विहार का निवासी हूँ। रेलयात्रा के दौरान मेरा सामान चोरी हो गया है, इसके लिए शिकायत दर्ज़ करवाना चाहता हूँ। कल सुबह दिल्ली से शानेपंजाब पकड़कर मैं जालंधर के लिए निकला था। सुबह 6:10 पर गाड़ी के चलते ही मैंने कुछ खाने-पीने का सामान निकाला और अपना बैग ऊपर की बर्थ पर रख दिया। नाश्ता करके सहयात्रियों के साथ बातचीत करते हुए कब बारह बज गए पता ही नहीं चला। सुबह जल्दी उठने के कारण बार-बार झपकी लग जाती थी। सभी सहयात्री भी ऊँघने लगे थे, मैं भी कुछ देर के लिए आँखें बंद करके बैठ गया। लगभग एक बजे के आसपास जब गाड़ी जालंधर पहुँची तो मैंने अपना बैग उठाने के लिए ऊपर की बर्थ पर हाथ डाला तो वहाँ से बैग नदारद था। सहयात्रियों से पूछा और उन सबके बैग भी देखे, वे मौजूद थे। केवल मेरा और एक अन्य सहयात्री का बैग नहीं था। उस बैग में कपड़ों के अतिरिक्त मेरे ऑफ़िस के कुछ ज़रूरी कागजात तथा 2000 रुपये रखे हुए थे। सहयात्री के बैग में कपड़ों के अतिरिक्त एक कैमरा और 5000 रुपये थे।

आपसे अनुरोध है कि उचित कार्यवाही करते हुए ज़ल्द से ज़ल्द चोर का पता लगाने का प्रयत्न करें, ताकि मेरे ऑफ़िस के सभी ज़रूरी कागजात मुझे मिल सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

4 अगस्त, 20××

10. आतंकवाद की समस्या पर अपने विचार प्रकट करते हुए समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली

विषय: आतंकवाद की समस्या पर विचार प्रकट करने हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं देश का एक आम नागरिक हूँ और देश में बढ़ रही आतंकवादी गतिविधियों से परेशान होकर आपको पत्र लिख रहा हूँ।

पहले कोलकाता और फिर पुलवामा में आतंकवादियों द्वारा सैनिकों को विस्फोट कर मार देना, सुनकर ही दिल दहलने लगता है। सुबह-सुबह अखबार उठाते ही और न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ पढ़ने व सुनने को मिलती हैं। असल में हम तभी जागरूक होते हैं, जब ऐसी घटना घटित हो चुकी होती है। पहले से ध्यान नहीं रखा जाता। लोगों में क्रोध व लालच काफी बढ़ गया है। वे इन दोनों के कारण अपनी समझ-बूझ खो चुके हैं। ज़रा-ज़रा सी बात पर मरने-मारने को उतारू हो जाते हैं और रातों-रात अमीर बनने का सपना देखते हैं। इन्हीं का फायदा उठाकर कुछ असामाजिक तत्व उनसे गलत काम करवाते थे। उनकी बुद्धि तथा विवेक को अपने नियंत्रण में कर लेते हैं। भोले-भाले गरीब लोग उनके झाँसे में आकर गलत काम करने को उतारू हो जाते हैं। रही-सही कसर ये 'सोशल नेटवर्क' ने पूरी कर दी है।

आपसे अनुरोध है कि आप इस पत्र को अखबार में छापें ताकि देश के युवा इसे पढ़कर समझ सकें कि ये अराजक ताकतें किस प्रकार उनका शोषण कर उन्हें गुमराह कर रही हैं। उन्हें समझ आए कि देश भी अपना है और देश के नागरिक भी अपने ही हैं।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

7 फरवरी, 20××

11. जल बोर्ड के अध्यक्ष को पत्र लिखकर अवगत कराइए कि आपके नल में गंदा पानी आने लगा है, इसका निराकरण शीघ्र किया जाए।

अध्यक्ष महोदय

मुख्य जल बोर्ड कार्यालय

नई दिल्ली

विषय: गंदे पानी के निराकरण हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं सेक्टर-25 रोहिणी का निवासी हूँ और आपका ध्यान अपने क्षेत्र में आ रहे गंदे पानी की ओर दिलाना चाहता हूँ।

श्रीमान, यह मेरा दूसरा पत्र है। पंद्रह दिन पहले भी मैंने गंदे पानी का फ़ोटो खींचकर, उसकी प्रतिलिपि के साथ आपको इस समस्या से अवगत कराया था। पानी इतना गंदा आ रहा है कि लगता है, कोई सिवर का पाइप पीने वाले पानी की पाइप के साथ जुड़ गया है। पानी से बदबू आ रही है। कल तो हद हो गई, जब नल से पानी के साथ-साथ छोटे-मोटे कीड़े और लगभग एक फुट लंबा साँप का बच्चा बाहर निकला। ऐसा पानी पीने के लिए भेजा जा रहा है जो कि साफ़-सफ़ाई करने के लिए भी उचित नहीं है। शहर के लोग पानी की बोतलें लाकर गुज़ारा कर रहे हैं, लेकिन आप देख रहे हैं कितनी गर्मी पड़ रही है, ऐसे में खरीदकर पानी पीना समस्या का समाधान नहीं है। बच्चे, बूढ़े सभी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप स्वयं इस कार्य में हस्तक्षेप करते हुए जाँच करें और दोषी कर्मचारियों को दंडित करते हुए हमारे क्षेत्र को दूषित जल से निजात दिलवाएँ।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

22 मार्च, 20××

12. सूखे से जूझते लोगों की कठिनाइयों का वर्णन करते हुए दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

संपादक महोदय

पंजाब केसरी

जालंधर, पंजाब

विषय: सूखे से पीड़ित लोगों की कठिनाइयों का वर्णन करते हुए पत्र।

मान्यवर

मैं जालंधर निवासी हूँ और अपने आस-पास के गाँवों में रहने वाले किसानों के जीवन को देख आपको पत्र लिखने को विवश हुआ हूँ।

कुछ दिनों पहले पास के गाँव जाने का अवसर मिला। बच्चों को साथ लेकर गए थे कि पंजाब के गाँव खुशहाल हैं। यहाँ के किसानों का जीवन स्वच्छ वातावरण में रहकर अच्छा बीत रहा है, पर वहाँ की स्थिति देखकर तो कलेजा मुँह को आने लगा। बात करने पर पता चला कि वर्षा न होने से खड़ी फसलें बरबाद हो गईं और किसान दाने-दाने को मोहताज हो गए। बैंक का लोन न चुका पाने की खातिर दो किसानों ने आत्महत्या कर ली। चमनलाल व हरविंद्र को तो बेटियों की शादी करनी थी, सो रिश्ता ही टूट गया। बच्चे भी कुपोषित लगा रहे थे। समझ में नहीं आता हमारी सरकारें वोट लेने से पहले किनके लिए बड़े-बड़े वादे करती हैं, वोट देते ही आम आदमी को दरकिनार कर दिया जाता है। सरकार को पता है कि इस साल सूखा पड़ा है तो इन गरीब किसानों हेतु कोई योजना बनाकर इनके घरों में चूल्हा जलाने का कार्य क्यों नहीं करती। ये किसान खेतों में अन्न उपजाकर सभी मनुष्यों का पेट भर सकते हैं तो क्या हम सब मिलकर इन कुछेक परिवारों के लिए कुछ नहीं कर सकते?

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप इस पत्र को अपने अखबार में छापें। जिसे पढ़कर संबंधित सरकारी कर्मचारी जागरूक हों और इन गरीब किसानों की समस्याओं को समझकर किसी उचित कार्यवाही को अंजाम दे सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

24 जुलाई, 20××

13. महिलाओं की असुरक्षा की बढ़ती घटनाओं पर चिंता प्रकट करते हुए तथा इसके समाधान हेतु समुचित उपाय बताते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

संपादक महोदय

सांध्य टाइम्स

नई दिल्ली

विषय : महिलाओं की असुरक्षा व उपाय बताते हुए पत्र।

महोदय

मैं देश का एक आम नागरिक हूँ और महिलाओं की असुरक्षा को लेकर बढ़ती घटनाओं से परेशान होकर आपको पत्र लिख रहा हूँ।

देश में बढ़ती ऐसी घटनाएँ अपने देश को दूसरे देशों की श्रेणी में नीचे गिरा देती हैं। समझ में नहीं आता हमारा समाज जहाँ बेटी को लक्ष्मी व दुर्गा का रूप माना जाता है, वहाँ का पुरुष वर्ग इतना निर्दयी और क्रूर क्यों होता जा रहा है। हर दिन बेटियों-बहुओं के साथ बलात्कार या छेड़खानी की घटनाएँ देखने व सुनने को मिलती हैं। पिछले दिनों इन्हीं कारणों से मेट्रो में स्त्रियों के लिए अलग कोच की व्यवस्था की गई, पर मुझे लगता है, यह उचित समाधान नहीं है। देश के युवाओं को बचपन में ही घर से ही लड़कियों से इज्ज़त के साथ पेश आने की शिक्षा देनी चाहिए। घर में लड़के व लड़कियों में भेदभाव नहीं करना चाहिए। लड़कों को लड़कियों से व लड़कियों को लड़कों से श्रेष्ठ साबित करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। घर के पुरुषों को घर की औरतों के साथ गलत तरीके से पेश नहीं आना चाहिए। यदि इन बातों का ध्यान रखा जाए तो हो सकता है कि आने वाले समय में हमें इन बढ़ती घटनाओं से मुक्ति मिल जाए।

आपसे अनुरोध है कि आप इस पत्र को अपने अखबार में स्थान दें ताकि लोग इसे पढ़ें, इस पर विचार करें और अपने सुझाव देकर देश के सच्चे नागरिक का कर्तव्य निभा सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

11 जुलाई, 20××

14. राशनकार्ड बनवाने के लिए अपने परिवार के सदस्यों का विवरण देते हुए क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी को आवेदन-पत्र लिखिए।

अधिकारी महोदय

क्षेत्रीय खाद्य कार्यालय

नई दिल्ली

विषय : राशनकार्ड बनवाने हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं कंझावला गाँव का निवासी हूँ और मेरी मासिक आय 7000/- से कम है। इसलिए मुझे राशनकार्ड बनवाना है ताकि सरकार के द्वारा दिए गए सस्ते अनाज को प्राप्त कर मैं अपना जीवन-यापन कर सकूँ। मेरे पारिवारिक सदस्यों का विवरण इस प्रकार है–

क्र.सं.	सदस्यों के नाम	मुखिया से संबंध	उम्र	आधार कार्ड नं.
1.	श्याम लाल	पिता	70 वर्ष	–
2.	संतरा देवी	माता	67 वर्ष	–
3.	घनश्याम दास	स्वयं	48 वर्ष	–
4.	रंगोली देवी	पत्नी	45 वर्ष	–
5.	समता	बेटी	20 वर्ष	–
6.	रूप	बेटा	16 वर्ष	–

इन सभी की आधार कार्ड की प्रतिलिपि भी साथ में संलग्न कर रहा हूँ। आपसे अनुरोध है कि मेरी मासिक आय को ध्यान में रखते हुए मेरा राशनकार्ड जल्द से जल्द बनवाने की कृपा करें। हम सभी आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

10 जुलाई, 20××

15. आए दिन बस चालकों की असावधानी के कारण हो रही दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली

विषय : बस चालकों की असावधानी से हो रही दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए पत्र।

मान्यवर

मैं देश का एक साधारण नागरिक हूँ और बस चालकों की असावधानी से हर दिन दिल्ली में हो रही दुर्घटनाओं से परेशान होकर आपको पत्र लिख रहा हूँ।

अभी कल ही बाहरी मुद्रिका में सफ़र करने का मौका मिला। मैं मधुबन चौक से चढ़ा था। शुरू में तो चालक बस को आराम से चलाता रहा। दीपाली, मंगोलपुरी फिर पीरागढ़ी के पार होते ही चालक ने पीछे से आती 883 रूट की एक अन्य बस को देख लिया। तब तो सवारी लेने के चक्कर में हम ही जानते हैं कि भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों से भी इन लोगों ने कैसे बस चलाई। सभी सवारियाँ चालक से भिड़ गईं कि वह ऐसा न करें। हम सभी घर-परिवार वाले हैं। घर पर सभी हमारा इंतज़ार कर रहे हैं। लेकिन चालक तो चालक कंडक्टर भी उसी के साथ हो लिया और दोनों ही सवारियों के साथ बदसलूकी करते हुए अपशब्दों का प्रयोग करने लगे। उनका यह भी कहना था कि जिसे भी हमारे इस तरह से बस चलाने पर एतराज है, वह नीचे उतर सकता है। श्रीमान आपको तो मालूम ही है कि एक बार टिकट लेकर इनसान मजबूर हो जाता है। तभी अचानक से पास से जाती एक कार के साथ हमारी बस भिड़ गई। गनीमत यह हुई कि किसी की भी जान नहीं गई, लेकिन जिस तरह से चालक बस चला रहा था, उस तरीके से तो किसी की जान भी जा सकती थी।

आपसे अनुरोध है कि बस नं. डी.एल. 8970 की संख्या के साथ ही इस पत्र को अपने अखबार में छापें ताकि संबंधित अधिकारी इसे पढ़कर इस पर उचित कार्यवाही कर सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

15 जुलाई, 20××

16. 'उमर उजाला' के संपादक को पत्र लिखकर 'यमुना सफ़ाई अभियान' में लोगों की भागीदारी की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

संपादक महोदय

अमर उजाला

नई दिल्ली

विषय : यमुना सफ़ाई अभियान में लोगों की भागीदारी हेतु पत्र।

मान्यवर

मैं भारत देश का एक आम नागरिक हूँ और देश की नदियों के दूषित होने से चिंतित हूँ। इसी कारण आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए पत्र लिख रहा हूँ।

पिछले दिनों मोदी जी द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान के तहत 'यमुना-सफाई अभियान' भी चलाया गया। इसमें सरकार की तरफ से सफ़ाई हेतु करोड़ों रुपये भी खर्च किए गए, पर यमुना ज्यों-की-त्यों दूषित बनी हुई है। पिछले दिनों अखबार में पढ़ने को आया कि एक व्यक्ति सुबह चार बजे यमुना किनारे जाता है और वहाँ जितने भी पॉलीथिन व फूल-पत्तियाँ गिरी होती हैं, उन्हें इकट्ठा कर बोरियों में भरकर कूड़े वाले स्थान पर डालता है। उसका यह कार्य सराहना के योग्य तो है ही मानवता की रक्षा हेतु भी उपयुक्त है। यहाँ समस्या केवल कुछ लोगों के कार्य करने की है। यदि हम सभी मिलकर कुछ घंटे सुबह व शाम इस सफ़ाई अभियान को दें तो मुझे लगता है कि इस समस्या का समाधान हम कुछ दिनों में ही कर लेंगे। आवश्यकता है तो केवल एक से एक के मिलने की। कुछेक लोगों की दिन में तैनाती की जाए ताकि लोग पूजा के नाम पर यहाँ सामग्री न फेंक सकें। लेकिन ये सभी कार्य हम आपकी सहायता के बिना नहीं कर सकते।

आपसे अनुरोध है कि आप हमारे इस पत्र को अपने अखबार में छापें ताकि लोग इसे पढ़कर जागरूक हों और हमारे इस स्वच्छता अभियान में मिलजुलकर कार्य करने को तैयार हो जाएँ। यमुना का स्वच्छ होना केवल दिल्लीवासियों के लिए ही नहीं समस्त मानवता की रक्षा के लिए उपयोगी साबित होगा।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

4 अगस्त, 20××

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर निर्देशानुसार पत्र लिखिए–

1. अपने क्षेत्र में पेड़-पौधों के अनियंत्रित कटाव को रोकने के लिए वन विभाग के सचिव को पत्र लिखिए।

2. पुस्तक विक्रेता या प्रकाशक से वी.पी.पी. द्वारा वसंत भाग-2 और 3 की पुस्तकें मँगवाने के लिए पत्र लिखिए।

3. अपनी रचना प्रकाशित करवाने हेतु 'आज तक' समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

4. डेंगू की रोकथाम हेतु स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

5. आपके क्षेत्र में कोई भी अस्पताल नहीं है, इसलिए अपने क्षेत्र में एक अस्पताल बनवाने की माँग हेतु अपने क्षेत्र के ज़िलाधिकारी को पत्र लिखिए।

6. बिजली के बिल में गड़बड़ी की जानकारी देते हुए बिजली दफ़्तर के अधिशासी अभियंता को पत्र लिखिए।

7. स्वयं को एक व्यापारी मानकर अपने क्षेत्र के सांसद को सीलिंग अभियान बंद करने के प्रयास हेतु एक पत्र लिखिए।

8. स्वास्थ्य विभाग के लापरवाह रवैये के कारण खाद्य-पदार्थों में मिलावट की समस्या गंभीर होती जा रही है। विभाग के निर्देशक के नाम पत्र लिखकर इस समस्या की ओर उनका ध्यान आकर्षित कीजिए।

❑❑❑